

苏海若

著

皇宮五千年

山海出版社



苏海若

著

皇宮五千年

皇 宫 五 千 年

苏 海 若 著

*

山东友谊书社出版

(济南经九路胜利大街)

山东省新华书店发行 山东新华印刷厂德州厂印刷

*

787×1092毫米32开本 20.75印张 400千字

1988年3月新1版 1988年3月第1次印刷

印数1—7,000

ISBN 7-80551-094-6 / I · 17

· 定价 2.60 元

目 录

唐虞朝

- 赤龙受娠 (1)
老人怪诞 (1)
蛮女避婚 (2)
家庭黑暗 (2)
得五彩图 (3)
凤凰来仪 (3)

夏商周三代朝

附列国

- 产生趣谈 (4)
夏
得山海经 (4)
不甘独宿 (5)
黄龙负舟 (5)
泣罪于途 (5)
让位遗闻 (5)
五子作歌 (6)
好闻裂缯 (6)
龙逢行歌 (7)

- 成汤祈雨 (7)
商
德及禽兽 (8)
桐宫悔过 (8)
梦中得圣 (9)
姬己丧邦 (9)
三十六妖 (10)
鸾鸞鸣岐 (11)
周 附列国
隘巷弃儿 (12)
文王戒子 (13)
泽及腐骨 (14)
作铭自警 (14)
鬻子四生 (15)
谤讟尚父 (16)
康王之城 (16)
胶船御王 (17)
太子得脱 (17)
共和先声 (18)

| | | | |
|------|------|------------|------|
| 死鬼复仇 | (18) | 楚王铸剑 | (33) |
| 千金一笑 | (18) | 秦 朝 | |
| 东迁失计 | (19) | 不韦献姬 | (35) |
| 秦伯祀神 | (20) | 挑兵构祸 | (36) |
| 武公自徵 | (20) | 废除溢法 | (37) |
| 州吁被杀 | (20) | 南渡求仙 | (37) |
| 姜氏怀春 | (21) | 子房狙击 | (38) |
| 无知作乱 | (21) | 置酒焚书 | (39) |
| 王厉行凶 | (22) | 阿房筑宫 | (39) |
| 段家纾难 | (22) | 太子自杀 | (40) |
| 赵盾弑君 | (23) | 珍奇之墓 | (41) |
| 翳桑遗母 | (23) | 倒行逆施 | (41) |
| 真狐匿山 | (24) | 狱中上书 | (42) |
| 崔杼弑君 | (24) | 赵高弑帝 | (45) |
| 晏婴三跃 | (25) | 子婴杀高 | (46) |
| 庭墙痛哭 | (25) | | |
| 湛卢入楚 | (26) | | |
| 入郢鞭尸 | (27) | | |
| 持刀口谏 | (27) | | |
| 送君南浦 | (28) | | |
| 葛妃行歌 | (29) | | |
| 吴王好色 | (30) | | |
| 无面见人 | (31) | | |
| 吴紫玉传 | (32) | | |

汉 朝

| | |
|------|------|
| 慷慨悲歌 | (47) |
| 楚霸王 | |
| 拔剑斩蛇 | (48) |
| 鸿祖 | |
| 约法三章 | (48) |
| 白璧献羽 | (49) |

| | | | |
|------|------|------|------|
| 悦服群臣 | (50) | 立而废之 | (73) |
| 未央取乐 | (51) | 弑后进女 | (74) |
| 宠姬夜泣 | (51) | 势高夷族 | (75) |
| 群谏废嫡 | (52) | 徐福上疏 | (75) |
| 宦者共膳 | (52) | 当头棒喝 | (76) |
| 故乡行乐 | (53) | | 成帝 |
| 厕中人彘 | (53) | 以真作假 | (77) |
| 鸩酒敬人 | (54) | 飞雉集庭 | (77) |
| 幽杀少帝 | (54) | 祸水灭火 | (78) |
| | 吕后 | 珠玉辍官 | (79) |
| 异种当锄 | (55) | 戒之在色 | (79) |
| 栗姬悲恨 | (55) | 许后赐死 | (80) |
| | 景帝 | 赵飞燕传 | (81) |
| 梁王杀彘 | (56) | 郑崇下狱 | (86) |
| 祠灶求仙 | (57) | | 哀帝 |
| | 武帝 | 七亡七死 | (86) |
| 牛腹伪书 | (57) | 燕啄皇孙 | (87) |
| 隔帷鬼语 | (58) | 王莽进女 | (88) |
| 山下闻声 | (58) | | 平帝 |
| 回头是岸 | (59) | 鬼神惑莽 | (88) |
| 汉武帝传 | (59) | 国号更新 | (89) |
| 薛灵芸传 | (71) | | 新莽 |
| | 文帝 | 饮酒不乐 | (89) |
| 脱簪求免 | (72) | 父子同妻 | (90) |
| | 昭帝 | 光武废后 | (90) |
| | | | 光武帝 |

| | |
|------|-------|
| 置酒行乐 | (91) |
| 姊妹连诛 | (91) |
| 陈辞侍母 | (91) |
| 马后淑德 | (92) |
| 明帝 | |
| 不封外戚 | (92) |
| 景帝 | |
| 贵人自杀 | (93) |
| 邓后恭谦 | (94) |
| 和帝 | |
| 诉冤得雨 | (95) |
| 安帝 | |
| 宠中求宠 | (95) |
| 顺帝 | |
| 食饼而死 | (95) |
| 质帝 | |
| 宫中设肆 | (96) |
| 灵帝 | |
| 二后相争 | (96) |
| 太后遭难 | (97) |
| 董卓废帝 | (98) |
| 鸡犬不安 | (99) |
| 献帝 | |
| 脐中置炷 | (99) |
| 坐床自叹 | (100) |

三 国

| | |
|------|-------|
| 操贼逼宫 | (102) |
| 立之而喜 | (103) |
| 陪了夫人 | (103) |
| 魏主妄作 | (104) |
| 公卿负土 | (105) |
| 两婢进粥 | (106) |
| 少子嗣立 | (106) |
| 死而无恨 | (107) |
| 乐不思蜀 | (108) |
| 后宫华丽 | (108) |

晋 朝

附十六国

| | |
|------|-------|
| 宫中号泣 | (109) |
| 武帝 | |
| 恃女益豪 | (109) |
| 富贵共之 | (110) |
| 羞煞贾充 | (110) |
| 逃于厕中 | (111) |
| 吴妓入宫 | (111) |
| 骏怀恶意 | (111) |

| | | | |
|-------|-------|------------|-------|
| 太子淳古 | (112) | 瞎儿一泪 | (123) |
| 惠帝 | | 孝宗穆皇帝 | |
| 贾后杀人 | (112) | 杀心太重 | (124) |
| 侍御绝食 | (113) | 天助人杀 | (124) |
| 廉耻沦亡 | (113) | 人亦杀之 | (125) |
| 不了了之 | (114) | 弑君立像 | (126) |
| 逼杀太子 | (115) | 孝武帝 | |
| 狗尾续貂 | (116) | 溺酒荒淫 | (126) |
| 菰菜莼羹 | (116) | 举酒祝星 | (127) |
| 后宫遭劫 | (117) | 燕主杀母 | (127) |
| 好读论语 | (117) | 太子昏庸 | (127) |
| 怀帝 | | 倒悬井中 | (128) |
| 新亭对泣 | (117) | 穷途托母 | (128) |
| 暴虎杀人 | (118) | 毒酒杀人 | (129) |
| 刘后上书 | (118) | | |
| 三后并立 | (119) | | |
| 愍帝 | | | |
| 陵中金帛 | (120) | 南北朝 | |
| 太弟失宠 | (120) | 临死叮咛 | (130) |
| 肉袒牵羊 | (121) | 吟诗取祸 | (130) |
| 裤中匿子 | (121) | 凉王盗嫂 | (131) |
| 中宗元皇帝 | | 尖锐笔头 | (131) |
| 鹿死谁手 | (121) | 二人争立 | (132) |
| 显宗成皇帝 | | 直谏遭殃 | (133) |
| 以金易粟 | (122) | 痛哭得官 | (133) |
| 两下相杀 | (122) | 猪王驴王 | (134) |

| | | | |
|------|-------|------|-------|
| 生之杀之 | (134) | 剃须施粉 | (146) |
| 君臣对奕 | (135) | 杀之成名 | (147) |
| 佛终不佑 | (135) | 亵渎宗族 | (147) |
| 改驕为弧 | (135) | 杨棺受诛 | (148) |
| 不杀不乐 | (136) | 母死而喜 | (149) |
| 匿身佛下 | (136) | 周主进学 | (150) |
| 猿子悲鸣 | (137) | 与后握手 | (150) |
| 不甘独宿 | (138) | 池水尽赤 | (151) |
| 步步莲花 | (138) | 护母归周 | (151) |
| 太妃出战 | (139) | 死而无恨 | (152) |
| 鸡生四翼 | (139) | 朝士吃粪 | (153) |
| 魏主好佛 | (140) | 房中和尚 | (153) |
| 胡后生男 | (140) | 剃发还家 | (153) |
| 太后祭庙 | (141) | 无愁天子 | (154) |
| 西方求佛 | (141) | 天杖捶人 | (154) |
| 养虎得噬 | (141) | 五后并立 | (155) |
| 乘酒杀之 | (142) | 作乱受伏 | (155) |
| 太后下发 | (142) | 突厥和亲 | (156) |
| 皇女充男 | (143) | 狎客唱和 | (156) |
| 闭口八年 | (144) | 置妃膝上 | (157) |
| 从妹不嫁 | (144) | 臣心如面 | (157) |
| 婢言不信 | (144) | 上书被诛 | (158) |
| 梁主修塔 | (145) | | |
| 君臣相友 | (145) | | |

隋朝

- 头上生角 (159)
诏定雅乐 (159)
太后救人 (160)
公主联姻 (161)
崔妃进毒 (162)
猫鬼作祟 (162)
爱妾生男 (162)
废嫡惨剧 (163)
不平之鸣 (165)
未卜先知 (166)
子弑其父 (167)
大背圆周 (167)
马上听歌 (168)
大闹龙舟 (168)
懿毛投地 (169)
帐里赋诗 (169)
私通妃子 (170)
格杀弗论 (170)
迷楼淫乐 (171)
海山仙界 (175)
开河始末 (183)

- 美女供献 (191)
将士得妻 (192)
溥天同怨 (192)

唐朝

- 体有三乳 (194)
高祖
兄弟阋墙 (194)
命毁鹊巢 (197)
临别赠言 (197)
太宗
洛阳话旧 (198)
三子争立 (198)
高宗
生日悲哀 (200)
武氏上台 (200)
二圣临朝 (202)
怀恨杀兄 (202)
太子两废 (203)
怀义得宠 (203)
中宗
万象神宫 (204)
武氏造像 (204)
先击脑袋 (205)
唐室更新 (206)

| | | | |
|------|-------|------|-------|
| 艰苦共尝 | (207) | 太真外传 | (233) |
| 死灰复燃 | (207) | 宫中舞马 | (250) |
| 五狗在朝 | (208) | 七郎横暴 | (251) |
| 家门不幸 | (209) | 赤子恨我 | (251) |
| 桑韦之歌 | (210) | 雕挟两兔 | (252) |
| 宫女拔河 | (210) | 草木流血 | (252) |
| 乳母之婿 | (211) | 珠玉楫橹 | (253) |
| 韦后横行 | (211) | 虢国夫人 | (254) |
| 焚珠碎玉 | (213) | 忘名之相 | (255) |
| 明皇 | | 四壁画龙 | (255) |
| 信任谗佞 | (213) | 五不可留 | (256) |
| 空中神语 | (214) | 肃宗 | |
| 望梅止渴 | (214) | 易地为宜 | (257) |
| 妙舞清歌 | (216) | 重见太上 | (258) |
| 死别生离 | (217) | 辅国专横 | (259) |
| 姊妹联吟 | (218) | 母也不谅 | (259) |
| 花容憔悴 | (220) | 代宗 | |
| 未免有情 | (221) | 宫中饭僧 | (260) |
| 恨也何如 | (222) | 盂兰盆会 | (261) |
| 妒煞杨花 | (224) | 一字一事 | (261) |
| 名士风流 | (226) | 假冒太后 | (261) |
| 真个魂消 | (229) | 德宗 | |
| 此恨绵绵 | (230) | 父子如初 | (262) |
| 梅蕊晚香 | (232) | 借吉成婚 | (264) |
| | | 劫夺民物 | (264) |

| | |
|------|-------|
| 公主贤淑 | (265) |
| 宪宗 | |
| 曳倒碑楼 | (265) |
| 削发出家 | (266) |
| 穆宗 | |
| 击球得病 | (266) |
| 太后裂书 | (267) |
| 不拜可风 | (267) |
| 敬宗 | |
| 坐于殿上 | (268) |
| 丹宸六箴 | (268) |
| 竞渡端阳 | (269) |
| 骊山何罪 | (269) |
| 游戏招殃 | (269) |
| 宦官弄事 | (270) |
| 文宗 | |
| 太子暴薨 | (272) |
| 言之丧心 | (272) |
| 僧尼还俗 | (273) |
| 武宗 | |
| 王麟孤直 | (273) |
| 宣宗 | |
| 宣宗责女 | (274) |
| 君心难测 | (274) |
| 内外气塞 | (275) |
| 僖宗 | |

| | |
|------|-------|
| 高骈受愚 | (276) |
| 鎔铁锢帝 | (277) |
| 昭宗 | |

五代

| | |
|------|-------|
| 袖里怀书 | (278) |
| 梁 | |
| 死无葬地 | (279) |
| 天地不容 | (280) |
| 晋王谢罪 | (280) |
| 纵火焚营 | (281) |
| 蜀 | |
| 太后卖官 | (282) |
| 以帛易女 | (282) |
| 宫女秉烛 | (283) |
| 脱冠露髻 | (283) |
| 蜀主东游 | (283) |
| 皇后辱父 | (284) |
| 唐 | |
| 先封伶人 | (285) |
| 唐主出猎 | (285) |
| 拜臣为父 | (286) |
| 强占民女 | (286) |
| 作清暑楼 | (286) |
| 伶人遣婢 | (287) |

| | | | |
|------|-------|------|-------|
| 白沙畋猎 | (287) | 杜后教子 | (299) |
| 阉竖误国 | (288) | 识破元机 | (300) |
| 伶人弑主 | (289) | 宋朝 | |
| 求援于人 | (290) | 抱尸哭子 | (301) |
| 须知农苦 | (290) | 太宗 | |
| 倩妹代之 | (291) | 希夷先生 | (301) |
| 卧病哀声 | (291) | 后苑赏花 | (302) |
| 方士惑主 | (292) | 纵火焚宫 | (302) |
| 晋主立后 | (293) | 开宝塔寺 | (303) |
| 晋 | | 群犬同食 | (303) |
| 马上弑主 | (293) | 半部论语 | (303) |
| 滥赏优伶 | (294) | 登楼观灯 | (304) |
| 一声长叹 | (294) | 神人下降 | (304) |
| 剖腹实盐 | (295) | 真宗 | |
| 辽 | | 令兄改名 | (305) |
| 淑妃号泣 | (295) | 效唐明皇 | (306) |
| 何用毛锥 | (296) | 宫中火灾 | (306) |
| 汉 | | 飞蝗蔽天 | (307) |
| 难了家事 | (297) | 太子监国 | (307) |
| 司空弑主 | (297) | 殿中种麦 | (308) |
| 继元弑母 | (298) | 仁宗 | |
| 如保赤子 | (298) | 厚葬宸妃 | (308) |
| 周 | | 掩饰后过 | (309) |
| 宋主视学 | (299) | 开棺哭母 | (310) |
| 宋 | | | |

| | | | |
|------|-------|-----------|-------|
| 误批帝颈 | (310) | 眷恋师师 | (326) |
| 剪发征赏 | (311) | 蒙尘始末 | (331) |
| 亲舐主目 | (312) | 徽钦 | |
| 妃死辍朝 | (312) | 临安小住 | (356) |
| 宿卫禁中 | (313) | 高宗 | |
| 阎罗包老 | (313) | 半臂遮身 | (356) |
| 大放宫人 | (314) | 帝作三宝 | (357) |
| 母子不容 | (314) | 遣使迎后 | (357) |
| 英宗 | | 岳飞下狱 | (357) |
| 屏后见衣 | (315) | 弩弦伤目 | (360) |
| 作诗入狱 | (315) | 孝宗 | |
| 神宗 | | 道士善相 | (360) |
| 太后谕帝 | (316) | 光宗 | |
| 斯人贤淑 | (317) | 离间三宫 | (360) |
| 哲宗 | | 不良之后 | (361) |
| 女中尧舜 | (317) | 个儿当贵 | (363) |
| 掳掠宫妾 | (318) | 宁宗 | |
| 柩前即位 | (319) | 恃宠不检 | (364) |
| 赤气亘天 | (319) | 理宗 | |
| 徽宗 | | 似道怒人 | (365) |
| 宫中乐宴 | (320) | 度宗 | |
| 灵素讲经 | (321) | | |
| 入见安妃 | (322) | 元朝 | |
| 街坊遇艳 | (323) | | |
| 上书除贼 | (325) | 大义凛然 | (366) |
| | | 世祖 | |
| | | 太子忧惧 | (368) |

| | | | |
|------|-------|-------------|-------|
| 仁厚可风 | (369) | 帐中盗玺 | (380) |
| 和尚就擒 | (370) | 帝师起立 | (380) |
| 不屈而死 | (370) | 溺血而死 | (380) |
| 上书论盜 | (371) | 文宗 | |
| 成宗 | | | |
| 太后上山 | (372) | 天雨绿毛 | (381) |
| 贾人献宝 | (372) | 顺帝 | |
| 海桑入都 | (372) | 皇后升祔 | (381) |
| 诏定庙次 | (373) | 巴延弑后 | (382) |
| 腰带掷地 | (374) | | |
| 武宗 | | | |
| 颁行钞法 | (374) | 明 朝 | |
| 北山南移 | (375) | 中都营殿 | (383) |
| 仁宗 | | 太祖 | |
| 慕太上皇 | (375) | 太祖受欺 | (383) |
| 剪发毁容 | (376) | 侃侃而谈 | (384) |
| 英宗 | | 行丧议礼 | (385) |
| 献七宝带 | (376) | 马后贤慈 | (386) |
| 追远报本 | (377) | 保保真奇 | (389) |
| 禁中张灯 | (377) | 和尚赐坐 | (380) |
| 大元通制 | (378) | 解缙上书 | (390) |
| 金字藏经 | (378) | 治狱通经 | (392) |
| 黄金神主 | (378) | 宫中戒严 | (392) |
| 开诚布公 | (379) | 吟诗触怒 | (393) |
| 明宗 | | 重视丝绮 | (393) |
| | | 纳履受灾 | (393) |

| | | | |
|------|-------|------|-------|
| 宁见阎王 | (394) | 西苑同欢 | (403) |
| 跃马投火 | (394) | 便殿托孤 | (403) |
| 惠皇 | | 英宗 | |
| 是耶非耶 | (395) | 和尚称帝 | (404) |
| 菜根之歌 | (395) | 纳后仪制 | (404) |
| 庵中题壁 | (395) | 死守京城 | (405) |
| 皇后靖难 | (396) | 夜有赤光 | (406) |
| 千金一株 | (396) | 万妃小传 | (407) |
| 翠红投缳 | (396) | 景宗 | |
| 剖肠祭主 | (397) | 宫内波涛 | (409) |
| 成祖 | | 金刀诬反 | (410) |
| 徐后明达 | (397) | 倒行逆天 | (411) |
| 射柳之戏 | (398) | 阿丑诙谐 | (412) |
| 宠幸权妃 | (398) | 宪宗 | |
| 颁行内训 | (399) | 纪妃藏子 | (412) |
| 建馆讲经 | (399) | 彩灯进献 | (414) |
| 仁宗 | | 谏架棕棚 | (414) |
| 割股疗母 | (400) | 吟诗得幸 | (414) |
| 宣宗 | | 房中秘术 | (415) |
| 贵妃佯惊 | (400) | 立庙被讥 | (415) |
| 田家异味 | (400) | 孝宗 | |
| 卿真爱我 | (401) | 黄米白米 | (416) |
| 念农情切 | (401) | 玉玺进献 | (416) |
| 宣宗御笔 | (402) | 白昼散灯 | (417) |
| 自知死期 | (402) | 定祔庙制 | (417) |

| | | | |
|------|-------|------|-------|
| 妓中拔取 | (418) | 妃子撰文 | (431) |
| 武宗 | | 孝事二宫 | (433) |
| 乌龙盘船 | (418) | 神宗 | |
| 选取民妇 | (419) | 教子有方 | (433) |
| 伞扇长随 | (419) | 售履报恩 | (434) |
| 酒馆消遣 | (420) | 宫内练操 | (434) |
| 陶奴作祟 | (420) | 明挺击案 | (435) |
| 野店寄居 | (422) | 光宗 | |
| 至死方休 | (423) | 红丸疗疾 | (436) |
| 出卖人肉 | (423) | 宫眷饰面 | (437) |
| 大放烟火 | (424) | 熹宗 | |
| 家里逍遥 | (425) | 宫女禳灾 | (438) |
| 得刘美人 | (425) | 竞创新妆 | (438) |
| 南城阅马 | (426) | 抹布刀儿 | (438) |
| 世宗 | | 宫娥读经 | (439) |
| 小山流览 | (427) | 更装踏雪 | (439) |
| 大毁佛像 | (427) | 幔中妙计 | (440) |
| 真险些儿 | (428) | 削发为尼 | (440) |
| 皇后亲蚕 | (428) | 田妃鼓琴 | (441) |
| 宫中建醮 | (429) | 崇祯 | |
| 救荒格言 | (430) | 小竖承恩 | (441) |
| 四铁御史 | (430) | 朝罢倦眠 | (442) |
| 刺臂上疏 | (431) | 进封贵妃 | (442) |
| 奉送白龟 | (431) | 见色起淫 | (443) |
| | | 太后画像 | (443) |